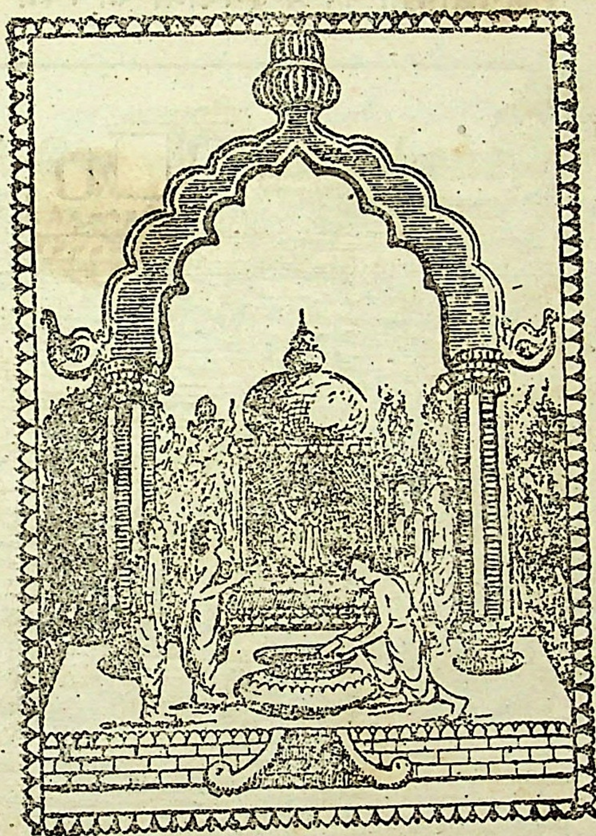
वृहत सचित्र

श्री श्री जगन्नाथ माहात्म्य कथा

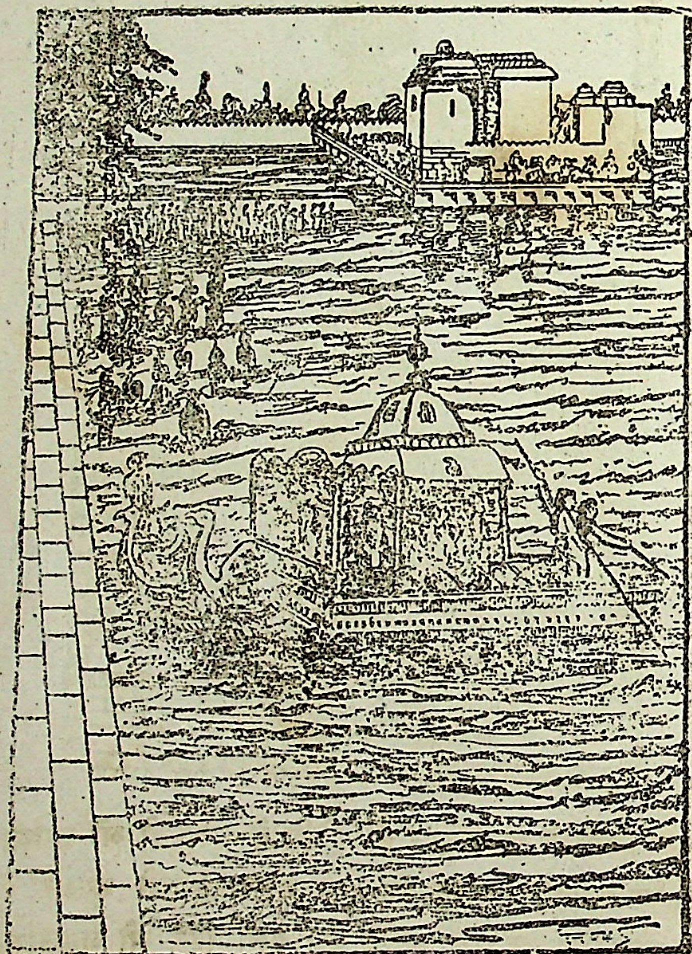


श्री जगन्नाथजी का फगडोल यात्रा

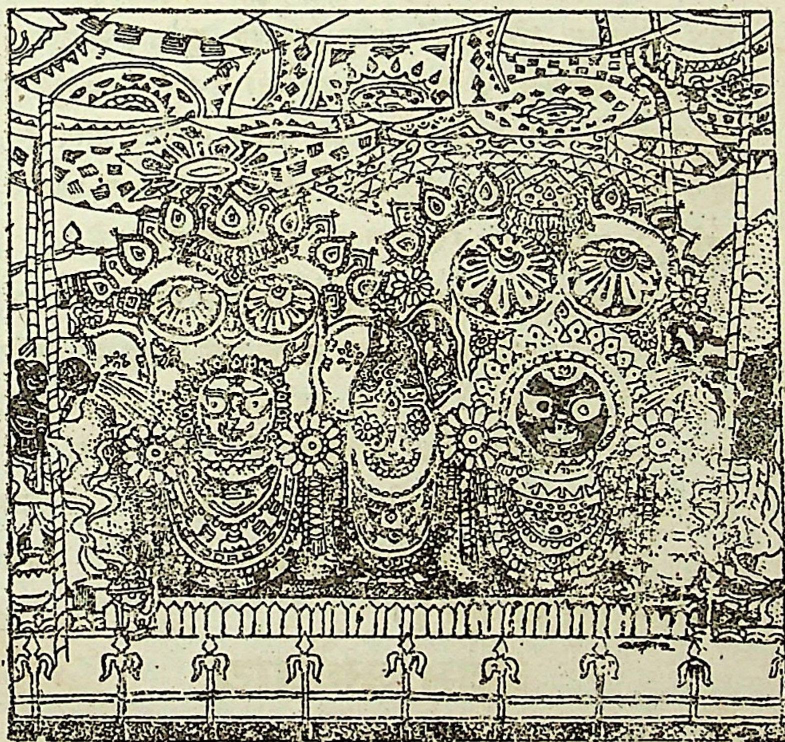


होली में फगडोल यात्रा होति है-धुलहडी श्री जगन्नाथ जी का फगडोल यात्रा के दीन मदनमोहनजी झूलते हैं। सब लोग उन पर फूल चढाते हैं। इसी दिन श्री जगन्नाथजी का राजभेट उत्सव होता है।

श्री जगन्नाथजी का चन्दनयात्रा का चित्र



यह यात्रा वैशाख सुदि ३ से १२ दिन होती है। इस यात्रा में जगन्नाथ का वही प्रतिनिधि मदनमोहन मूर्ति रोज चन्दन तालाब में जाकर नाव पर अपने संगी लोकनाथ आदी महादेव को लेकर घूमाकर चन्दन आदि लगाकर



श्री जगन्नाथजी का स्नानयात्रा का चित्र

[illegible] करते हैं और उस समय में नृत्यगानादि भी होते हैं। और [illegible] चन्दन [illegible] स्नानादि चन्दन लेपन कर सुगन्धित वस्तु व्यवहार करते हैं। उस दिन से जगन्नाथजी का रथ बनाने का काम शुरू होता है।

यह स्नानयात्रा ज्येष्ठ सुदी १५ को होती है। उस दिन भगवान् की चारों मूर्ति (बलभद्र, सुभद्रा, जगन्नाथ, सुदर्शन) रत्नवेदी से आकर स्नान वेदी में श्री १०८ सुवर्ण घट जल से स्नान करके गणेश रूप धारण करते हैं और इस दिन से भगवान् रत्न सिंहासन पर १५ रोज तक बीमार रहते हैं। उसके लिए १५ रोज तक पट बन्द रहता है।

यह रथयात्रा आषाढ़ सुदी द्वितीया को होती है। उस दिन भगवान् रोगमुक्त हो स्नान करके रथ में आरूढ़ अपने जन्मस्थान (जनकपुर) जाकर वहां सात रोज रहकर फिर अपने रत्न सिंहासन पर विराजते हैं। यह यात्रा सब यात्राओं से अधिक है और उसके लिये शास्त्र में भी ऐसा लिखा है– "रथे तु वामनं दृष्ट्वा पुनर्जन्म न विद्यते" उसके अतिरिक्त और भी बहुत हैं।

प्रथम अध्याय

एक समय परम पावन नैमिषारण्य में शौनकादि अट्ठासी हजार ऋषियों ने सूतजी से नम्र होकर उत्तमोत्तम

पवित्र तीर्थ व क्षेत्रों के माहात्म्य को पूछा तब सूतजी ने समस्त पृथ्वी मण्डल के तीर्थ व क्षेत्रों के मध्य प्रथम श्रीपुरु-षोत्तम (जगन्नाथ) क्षेत्र के माहात्म्य का वर्णन किया जिस कथा अति पवित्र है। हे शौनक! श्रीपुरुषोत्तम क्षेत्र में परम पुरुष श्रीनारायण जगन्नाथ इस नाम से वास करते हैं। यह क्षेत्र उड़िसा देश में ऋषिकुल्या और वैतरणी नदी के मध्य में दश योजन (चालिसकोस) के विस्तार से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को देनेवाला शान्तिदायक है। हे मुनिगण! उसी स्थान में वैतरणी नदी में और विन्दु हृदय में स्नाने गिरिजा देवी, नीलकण्ठ महादेव के दर्शन, सूर्यक्षेत्र और चन्द्रभागा नदी में स्नानादि जो यात्री वहाँ जाकर करता है, वह ऋषि तुल्य गिना जाता है, और अन्य सवंश यात्रियों के लिये वन्दनीय होता है। हे शौनक! श्री पुरुषोत्तम क्षेत्र में शङ्खा-कार कोनेश्वर स्थान, नीलाचल में रोहिणी नामक कुण्ड है यहीं पर कल्पवृक्ष आदि के दर्शन स्पर्श व पूजन दानादि करने यात्री के अनेक जन्म संचित पाप के नाश हो जाते हैं, यहाँ से बहुत ही नजदीक पृथ्वी स्वदेवी और लक्ष्मीयुक्त रत्न-सिंहासन पर नीलमाधव भगवान् स्थित हैं। यहाँ से सौ हाथ की दूरी में नीलमाधव भगवान् ब्रह्मरूपादि नरसिंह भगवान् सदैव स्थित रहते है। जिस के दर्शन पूजन आदि से कोटिगुण फल मिलता है। ब्रह्महत्यादि पाप नाश करने

माहात्म्य को भली-भांति वर्णन किया। यमराज से कहा दिया कि इस पांच कोश तीर्थ के ओर में तुम्हारा कुछ अधिकार नहीं है। जो कोई यात्री यहाँ एक क्षण मात्र भी स्थित हुआ है उसे अन्य देशों, में भी तुम्हारा अधिकार न होगा। हे यमराज मैं सत्य ही कहती हूँ, हे सूर्यपुत्र ! ब्रह्माण्ड में जगन्नाथ क्षेत्र के बराबर अन्य क्षेत्र नहीं है, जो पुरुष सदैव वहाँ वास करते हैं उनके माहात्म्य मैं कहाँ तक वर्णन कर सकती हूँ। यह माहात्म्य सुनकर अति प्रसन्न मन यमराज निज स्थानको चले गये। सूतजी कहते हैं कि हे शौनक ! दारुरूप ब्रह्मस्वरूप भगवान् श्रीपुरुषोत्तम क्षेत्रमें शयन करते हैं। इससे बढ़कर अन्य पवित्र स्थान तीन लोक में नहीं है। यहाँ के माहात्म्य को वर्णन करने को किसी की सामर्थ्य नहीं है। हे शौनक ! इस समय ऋषिगण अति पवित्र माहात्म्य को जो सुनेंगे, सुनावेंगे, पढेंगे, पढ़ा॰ वेगें वह निःसन्देह वैकुण्ठधाम जावेंगे।

द्वितीय अध्याय

शौनकादि ऋषियों ने पुरुषोत्तम क्षेत्र के माहात्म्य को और पूछा तब सूतजी ने फिर वर्णन किया कि हे शौनक ! मालवा देश में समस्त गुण युक्त अति तेजस्वी राजा इन्द्र-द्युम्न रहता था। उक्त राजा एक समय अभ्युदक इन्द्रद्युम्न पूजन करता था कि एक दिन जटिल मुनि आये। राजा ने

मुनि का पूजन सत्कार किया, तब मुनि ने प्रसन्न होकर कहा की हे राजन ! उडीसा देश में समस्त तीर्थ से युक्त नील पर्वत श्रीपुरुषोत्तम क्षेत्र है। वहाँ पर श्री जगन्नाथजी समस्त देवगणों से युक्त विराजमान है, वहीं पर हे राजन ! आप भी सकुटुम्ब जाकर वास करें। यह ऋषि आज्ञा पाकर राजा ने निज पुरोहित के छोटे भाई को पुरुषोत्तम क्षेत्र प्रथम देखने को भेजा। वह अन्त में जाय विश्वावसु नामक शवर से मिलकर यहाँ के समस्त वृत्तान्त को जानकर रोहिणीकुण्ड में स्नान करके वटवृक्ष का स्पर्श करते हुए रत्न सिंहासन स्थित नील तनुधारी जगन्नाथ श्री के दर्शन करके अनेक भक्तिभाव से नमस्कार पूजन आदि करके स्तुति किया तदनन्तर विश्वावसु के मकान पर आकर उत्तमोत्तम भगवान् का प्रसाद भक्षण किया और शवर से पूछा कि इस घोर जंगल में तुमको यह उत्तमोत्तम पदार्थ कहाँ से मिलते हैं ? विश्वावसु ने कहा की हे विप्र ! जगन्नाथजी के दर्शन पूजने के लिये स्वर्ग से देवता आते हैं। और वहीं आकर पूजा करके उन उत्तमोत्तम पदार्थों को भोग लगाते हैं। उसी को हम लाकर यात्री सत्कार करते हैं, और हम भी सकुटुम्ब भोजन करते हैं। यह वार्त्तालाप करते हुए विद्यापति सो गया तब भगवान् जगन्नाथ ने स्वप्न दिखाया कि तुम जाकर राजा इन्द्रद्युम्नों को सकुटुम्ब यहाँ ले आओ और तुम

आकर राजा इन्द्रद्युम्न को सकुटुम्ब यहाँ ले आओ और तुम हमारी सभा में उपस्थित हो। बाद प्रातःकाल होते ही विश्वावसु से मिलकर विद्यापति निजदेश में आकर राजा से समस्त वृतान्त कहते गये। तब राजा ने निज देश में नागरा बजाकर कहला दिया कि सब लोग हमारे साथ उडिया देश में वास करने के लिये चलो। यह आज्ञा पाकर समस्त प्रजा राजा के साथ चलने को उद्यत हुई। राजा सब प्रजा को साथ में लेकर उड़िसा देश को चल दिया। रास्ते में कासकी नदी (गंगा और चक्रतीर्थ एकाम्र विपिन) के माहात्म्य का वर्णन किया, हे राजन! यहाँ (गंगासागर) स्नान मात्र से और वास करने से यात्री को पुनर्जन्म नहीं लेना पड़ता। यह वचन सुनकर राजा अति प्रसन्न हुये।

तृतीय अध्याय

हे शौनकजी! इतने ही में एकाम्रवन में स्थित राजा को एक घंटे का शब्द सुनाई दिया तब राजाने नम्र होकर नारदजी से पूछा। नारदजी ने कहा कि हे राजन! एक समय काशी निवासी विश्वनाथ महादेवजी ने इस वन में तपस्या किया तब नीलमाधव प्रसन्न हुए। महादेव ने वर माँगा कि हमारे नाम से यह वन प्रसिद्ध होवे। तब नीलमाधव ने एवमस्तु कहा, तभी से भुवनेश्वर नाम से प्रसिद्ध स्थान हुआ और तभी से लिंगेश्वर महादेव यहाँ पर सर्वदा वास करने

लगे। यह नृभृग के वचन सुनकर बिन्दु कुण्ड नामक तालाब में राजा स्नान करके कोटी लिंगेश्वर महादेव का दर्शन पूजन करने गये नारद के साथ प्रातः काल में राजा कपोत शाल्मि में प्रवेश कर के कपोतेश्वर विश्वेश्वर के माहात्म्य पूछा। नारद ने कहा की हे राजन! एक समय अर्जुन पुरू कृष्ण नीलमाधव के दर्शन निमित्त यहाँ आए तो वन के वृक्ष के साथ विश्वेश्वर शिव की स्थापना कर के ऐसे घोर जगल में बड़े बड़े राक्षसों कि मारा तभी से विश्वेश्वर नाम के शिव प्रसिद्ध हुए। एक समय काशीस्थ शिव नील-माधव के दर्शन कर के लौटे तो कपोत के स्थान पर आये तभी से यह कपोतेश्वर नाम के शिव प्रसिद्ध हुए। बस इतने ही में राजा की बांयी आंख फरकी तब इसका फल नारद से राजा ने पूछा। नारद ने कहा कि तुम्हारे आज पुत्र उत्पन्न होने वाला है। इस से आज आप को नीलमाधव के दर्शन नहीं मिलेंगे, जिस समय तुमने विद्यापति को भेजा था तभी से भगवान् अन्तर्धान हो गये हैं। स्वर्णकृत बालू पीत-वर हो गई। यह वचन सुनकर राजा अति दुःखी हुआ। तब नारद ने ज्ञानोपदेश राजा को सुनाया। इस भाँति वार्तालाप होते हुए राजा नीलमाधव के मन्दिर के पास पहुँचा। तब नारद ने कहा कि हे राजन! इस समय भगवान् श्वेत-दीप का चले गये है। इतने ही में आकाशवाणी हुई कि हे

ऐ अर्जुन ! तुमसे जो कुछ नारद कहें इस को तुम सत्य मानकर इनकी आज्ञा को मानो। यह शब्द सुनकर राजा अति प्रसन्न हुआ और नारद के साथ चलकर ब्रह्माद्वारा स्थापित नीलकण्ठ महादेव के पास गया। वहाँ पांच रात्रि रहकर विश्वकर्मा द्वारा एक उत्तम मन्दिर बनाकर नरसिंह भगवान को स्थापित किया। फिर नारद के आज्ञा से एक सौ अश्वमेध सामग्री युक्त यज्ञशाला बनवाई और एक सौ यज्ञ नारद सहित किया। राजा सातरोज बिना अन्न जल के व्रत धारण किया। धर्म द्वार पर स्थिर रहा, तब भगवान प्रसन्न होकर स्वप्न में चतुर्बाहु धारण कर के लक्ष्मी और बलदाउ युक्त दर्शन दिया तब राजा ने अनेक भाँति स्तुति किया। बाद आँख खोलने पर किसी को न देखा। यह हाल नारद प्रति राजा ने कहा। नारद ने अनेक भाँति से राजा को सन्तुष्ट किया ! प्रातःकाल राजा नारद के साथ समुद्र स्नान को गये और स्नान करके यों ही बाहार निकला त्योंही एक वृक्ष और नारायण भगवान के साक्षात् दर्शन मिले। राजा ने अति प्रसन्न होकर स्तुति पूजन किया। दारुरूप भगवान् को यज्ञशाला में स्थिर कर के समस्त कर्म का सम्पूर्ण करके राजा भगवान् से सदैव स्थिर रहने को सादर प्रति पूछा। उसी समय में भगवान् प्रकट होंगे, तुम यहाँ पर पन्द्रह रोज उत्सव करो फिर एक बढ़ाई आवेगा. उसको तुम

मन्दिर में बन्द कर देना । बाहर से खूब बाजा बजवाना । वह भीतर दारुरूप भगवान की प्रतिमा बनायेगा । इस यह शब्द सुनकर राजा अति प्रसन्न हुआ और आकाशवाणी के कहे तुल्य ब्रह्म को लिये एक बढ़ाइ आया । राजा ने उसी भाँति उसको मन्दीर में बन्द कर के बाहार राजा ने अति उत्सव किया, खब बाजा बजवाये ।

चतुर्थ अध्याय

उसी समय देवताओं ने आकाश में स्थित होकर नृत्य गान करते हुए पुष्प वृष्टि किया । उस समय बलभद्र, सुभद्रा युक्त श्री जगन्नाथजी प्रकट हुए । तब मन्दिर खोला गया और नारायण को सभी ने दर्शन, पूजन किया और स्तुति कर के राजा इन्द्रद्युम्न की बड़ी प्रशंसा की और निज स्थानों को चले गये । बाद, राजा ने उस मन्दिर को खुब ऊंचा करके फिर बनवाया और नारद के साथ राजा विश्वावसु और विद्यापति को रख कर पुष्पक विमान में चढकर ब्रह्मा को बुलाने के निमित्त ब्रह्मलोक को गया । वहाँ जाकर राजा ने इन्द्रादि देवताओं को देखा बाहार नारद के साथ राजा को ब्रह्मा के दर्शन मिले । राजा ने अनेक भाँति स्तुति किया, नारद ने राजा का मतलब ब्रह्मा के प्रति कहा कि हे ब्रह्मण ! आप चलकर दारुमय जगन्नाथजी की प्रतिमा को प्रतिष्ठा कर दीजिये । इतनी बात होति ही थी की दुर्वासा

आये। दुर्वासा का सत्कार होने के बाद जो नारद ने ब्रह्माने कहा वही दुर्वासा ने भी प्रतिष्ठा करने को कहा तब ब्रह्माने कहा की हे समस्त देवताओं ! तुम भी प्रतिष्ठा में आना, मैं भी चलुंगा लेकिन राजा तुम्हारी समस्त यज्ञ सामग्री वहाँ नष्ठ हो गई। कारण कि तुमको वहाँ से आये कई सम्वत्सर बीत गये। वहाँ पर सिवाय मन्दिर और मूर्ति के कुछ नहीं रहा। उससे नारद शङ्खनिधि, पद्मनिधि को साथ में लेकर वहां जाकर सामग्री इकठा कराओ। बाद में आकर मैं प्रतिष्ठा कराऊँ। यह आज्ञा पाकर राजा इन्द्रद्युम्न वहाँ से चला आया।

पञ्चम अध्याय

वहाँ आकर राजा मन्दिर के पास सबको देखते हुए ही जगन्नाथ को देखा। स्थापित मूर्ति को झट से उठा के पूर्व द्वार से आकर मूर्ति को बाहार रख दिया और क्रोध करके पुछा की इस मूर्ति को किसने स्थापित किया है, तो मालुम हुआ कि गालब राजाने मन्दिर जिर्णोद्धार करके स्थापना किया है। यह सुन राजाने झट लड़ाई कर दी। गालब राजा भी आकर पहुँचा, तब नारदने गालब राजा से समस्त हाल राजा इन्द्रद्युम्न को कहा। यह सुनकर लज्जित होकर निज राज्य देकर इन्द्रद्युम्न के पीछे जा बैठा। फिर राजा इन्द्रद्युम्नने मन्दिर को साफ कराता, तीन रथ बनवाके

ब्रह्मा का ध्यान किया• की हंसोस्थित ब्रह्माजी आकर उपस्थित हुये, बाद समस्त सामग्री को देखकर अत्यन्त अति प्रसन्न होकर प्रतिष्ठा करके रत्नवेदी में यथायोग्य स्थापन कराये। सुदर्शन आदि को स्थित करके भगवान् स्तुति किया और जय शब्द करके राजा इन्द्रद्युम्न को धन्यवाद दिया।

षष्ठ अध्याय

सूतजी सौनक से बोले की हे शौनक ! दारुमय भगवान की प्रतिष्ठा ब्रह्माने वैशाख शुक्ल अष्टमी वृहस्पति पुष्यानक्षत्र में कराया। बाद इन्द्रद्युम्न राजा को राज्य शासन पर स्थित किया। दारुमय जगन्नाथजी अति प्रसन्न हो राजा से बोले की मैं तुमको अपनी अनपायनी भक्ति देता हूँ। मैं यहाँ ब्रह्मा के द्विप्रहरार्द्ध के अन्त तक वास करूंगा। मै आजन्म तथापि ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा को मेरा जन्मदिन, उस तिथि से पन्द्रह रोज तक मन्दिर का बन्द रखना। बाद आषाढ शुक्ल द्वितीया को रथोत्सव करना। आषाढ शुक्ल एकादशी को मेरा शयन श्रावण शुक्ल पूर्णिमा को हमारा वार उत्सव। भाद्र शुक्ल एकादशी को हमारा करवट लेना। कार्तिक शुक्ल एकादशी को उत्थापन। मार्गशीर्ष शुक्ल छठ को हमारा शृंगार, पौष शुक्ल पूर्णिमा को हमारो पुष्याभिषेक, चतुर्दशी को हमारा छभकाषिरण, वैशाख शुक्ल

और फालगुन शुक्ल पूर्णिमा को दोलत्सव, चैत्र शुक्ल त्रितीया को चन्दन यात्रा करना। इस भांति बारह मास मेरे बारह उत्सव हैं, राजन् तुम करना। हे शौनक! इस भाँति जगन्नाथजी के वचन को सुनकर सब लोगों ने भगवान को फिर से स्तुति किया और निज स्थान को चले गये।

सप्तम अध्याय

सूतजी शौनक से कहा कि हे शौनक! यात्री प्रथम रोहिणी कुण्ड में स्नान करके अक्षयवट नीलचक्र, विघ्नेश गणेश, नृसिंह, विमला देवी, देवताओं के प्रार्थना कर पातालेश्वर, जय विजय को नमस्कार करके स्वस्थ चित्त से बलभद्र, सुभद्रा और श्री जगन्नाथजी के दर्शन पूजन नमस्कार करें। इस विधि से हे शौनक! जो यात्री विष्णु भगवान् का दर्शन पूजन करते ह, उनको पद पद में अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है। इस पूजित क्षेत्र के बराबर अन्य कोई क्षेत्र नहीं है।

अष्टम अध्याय

सूतजी इतनी कथा कह कर बोले कि हे शौनक! यात्री श्वेतगङ्गा में स्नान करके श्री जगदीश पुरी में तीन दिन अवश्य ही वास करें श्वेतगङ्गा में श्राद्धकर

श्वेतमाधव आदि जो वहाँ पर स्थित देवता है, उनका दर्शन करते हुए रास्ते में साक्षीगोपाल के दर्शन करता हुआ यात्री निज स्थान (मुकाम) को आवे। घरपर आकर ब्राह्मण भोजनादि यथाशक्ति करावे। इस भाँति की यात्रा करने से पद-पद अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है। श्री जगन्नाथजी के प्रसाद भक्षण करने से कोटि कपिला गौ के दान करने का फल प्राप्त होता है। श्री जगन्नाथजी प्रसाद या माला स्पर्श किया भी हो तो ब्राह्मण भोजनादि को कराना चाहिए। प्रसाद के खाने से श्री जगदीश पुरी के समस्त स्थानों के जाने का फल प्राप्त होता है। इससे बिना विचार किये श्रीजगदीश के प्रसाद को खा लेवें। अनादर कभी न करे। इस पुनीत श्री जगन्नाथ माहात्म्य को जो पुरुष पढ़ेंगे पढ़ावेंगे, सुनेंगे सुनावेंगे, या एक-एक प्रति पुस्तक ब्राह्मण को दान करेंगे उन्हें वहीं बैठ दर्शन फल प्राप्त होगा। हे शौनक! इन्द्रद्युम्न राजा नारद के स्थान स्वदेह वह लोक का चला गया और मैं भी इस कथा को यहाँ पर समाप्त करता हूँ। शौनकादि ऋषियों ने सूतजी को पूजा किया और प्रसन्न मन धन्य धन्य शब्द कहकर कथा को समाप्त किया।

—०—

श्रीजगन्नाथ पुरी गाईड (पुरुषोत्तम क्षेत्र)

यह तीर्थ उड़ीशा प्रान्त के समुद्र तट पर बसा हुआ है। ईस्ट (ब० पू० रे०) एक सुप्रसिद्ध स्टेसन भी है। खुरदा रोड जंक्शन से एक ब्रांच लाईन पुरी को गई है। स्टेसन से तीर्थ स्थान लगभग डेढ़ या दो मील के दूरीपर है। यहाँ अनेक धर्मशालायें हैं। स्टेसन से रिक्सा, घोड़ा गाडी तथा मोटर की सवारिया मिलती हैं।

श्री महाप्रभुका मन्दिर

पुरी के बीच में प्रधान सड़क के आखीर पश्चिम समुद्र से लगभग १ मील,उत्तर बीस फीट ऊंची जमीन पर जिसको "नीलगिरी" कहते हैं मन्दिर बना है। मन्दिर के अन्दर अन्य धर्मावलम्बी के लोग तथा चमडे की कोई चीज जाने नहीं पाती। मन्दिर घेरे में एक तरफ ६६५ फीट और दूसरी तरफ ३१५ फीट है। इसके चारो तरफ का फाटक है। पूरब का फाटक सब फाटकों से उत्तम है। दरवाजे के दोनों तरफ का सिंह का मूत्तियां है। इसी से इसका नाम सिंहद्वार पड़ा है। सिंहद्वार के आगे काले रंगमें एक ही पत्थरका ०५ फीट ऊँचा १६ पहल का सुन्दर गरुड़स्तम्भ खड़ा है। जिसके सिर पर सूर्य के सारथी अरुण की मूर्त्ति है। जगन्नाथजी के खास मन्दिर के आगे पूरब की ओर

नृत्य मन्दिर और इसके आगे भोग मन्दिर और जगमोहन मन्दिर है और ये सब परस्पर मिले हुए हैं। इतिहास से जान पड़ता है कि जगन्नाथजी के वर्तमान मन्दिर को राजा अनंगभीमदेव बनवाया है। १४ वर्ष काल होने के उपरान्त सन ११९९ ई० में मन्दिर तैयार हो गया। नृत्य मन्दिर पीछे बना हुआ है। भोग मन्दिर पीछे से महाराष्ट्रो ने बनवाया है।

जगन्नाथजी का खास मन्दिर १९२ फीट यानी इमारती गजसे ६० गज उँचा ८० फीट लम्बा और इतना ही चौडा है। चारो ओर मन्दिर और जगमोहन पर स्त्रियों और पुरुषों की बहुत सी प्रतिमाये बनी हैं और लिखित चित्र भी हैं और मन्दिर के ऊपर याने कटिस्थ:: पर दक्षिण की कोठरी में कलियुग की प्रतिमा और शिखर पर नीलचक्र और पताका लगी है। मार्कण्डेय तालाब, श्वेतगंगा, पार्वती सागर (लोकनाथ के पास) औ इन्द्रद्युम्न तालाब (जिसे लोग पंचतीर्थ कहते है) पुरी में पांच महादेव विख्यात हैं, लोकनाथ; मार्कण्ड़ेश्वर, कपालमोचन, यमेश्वर और नीलकण्ठ।

—०—

रत्नवेदी

पत्थर की ४ फीट ऊँची और १६ फीट लम्बी वेदी है, यह मन्दिर के भीतर पश्चिम की ओर है। रत्नवेदी के ऊपर की तरफ ६ फीट लम्बा सुदर्शन चक्र है इसी के दक्षिण और जगन्नाथ बलभद्र और सुभद्रा की मूर्तियाँ है। जगन्नाथजी के एक तरफ लक्ष्मीजी और दूसरी ओर सत्यभामा विराजमान है और सामने इन्द्रद्युम्न का धातु निर्मित प्रतिमा है।

आरतीश्रृंगार वेश

बड़े तड़के जागरण के समय मंगल आरती और श्रृंगार हुआ करता है। इसके बाद अवकाश वेष फिर प्रहर वेष और फिर इसके पश्चात् चन्दन लेपा वेष बनाया जाता है। इन सभी में बड़ा श्रृंगार वेष है जो ठीक गोधुलिके बाद संध्या धूप के तुरन्त ही पीछे मनाया जाता है। इन सभी के अतिरिक्त समय समय पर जगन्नाथजी का दामोदर वेष, वामन वेष, वृद्ध वेष आदि बनाये जाते हैं।

मन्दिर के अन्दर मुक्ति मण्डप, अक्षयवट जैसे लोग अद्भुत मान यहाँ प्रलय काल से विष्णु की बालमूर्ति है जिसके बालमुकुन्द कहते है। उसी तरफ रोहिणी कुण्ड नामक एक छोटा कुण्ड है। जिसको निकट चतुर्भुजी

विमला देवी, नृसिंहजी, लक्ष्मी एकादशी आदि बहुतेरे देवियोंका मन्दिर है। बड़े मन्दिर के पश्चिम सरस्वती अर्माबाई, कर्म लिखने वाली विधाता, कालीजी इत्यादि देव देवी मूर्तियाँ हैं। उत्तर के पास शीतलाजी की मूर्ति है। इस हाते के भीतर लगभग ५१ स्थान और मन्दिर हैं।

बाहर के हाते में सिंह दरवाजे के ऊपर वेदी के भितर २१ सीढ़ियों के ऊपर मन्दिर का फर्श है। दरवाजे के और यहाँ प्रसाद बेचने वालों की दुकान है। फाटक सेहराजी के ताख में श्री जगन्नाथजी की एक छोटि मूर्ति है जिसको लोग पतितपावन कहते हैं। कुछ जाति के लोग जो मन्दिर के हाते में नहीं जाने पाते इस मूर्ति का दर्शन करते हैं सिंह दरवाजे के उत्तर स्थानकी वेदी है जहाँ जल में श्री जगन्नाथजी स्नानके लिए जाते है। दरवाजे के पास एक इमारत हैं जिस में महाप्रभु का स्नान देखने के लिए लक्ष्मीजी बैठती हैं इसि तरफ एक और इमारत हैं।

यहाँ लक्ष्मीजी श्री महाप्रभु को उनके स्नान के बाद उनके स्वागत के लिए जाती हैं बाहारके हाते में जगन्नाथजी का पाठशाला है। हाथी फाटक के पश्चिम दक्षिण बैकुण्ठ नाम का एक छोटा मकान हैं जहाँ बहुतेरे पण्डेय यात्रियों से अटका सङ्कल्प कराने कपालमोचन और यमेश्वर

जगदीश के मन्दिर के कोठरी के बाहर गोल गुम्बज वाले कपालमोचन शिव का मन्दिर है। वहां से थोड़ी दूर पर दक्षिण एक मन्दिर में रामेश्वर शिवलिंग है। वहां से थोड़ा दक्षिण गोपीनाथ का मन्दिर है।

श्वेतगङ्गा

स्वर्गद्वार रास्ते के पास श्वेतगङ्गा नामक एक पक्का तालाब है। इसके किनार पर श्वेतकेश्वर का मन्दिर बना हुआ है। इनकी मूर्ति भी काठ की बनी है इनका भी कलेवर के समय कलेवर बदला जाता है।

स्वर्गद्वार

जगन्नाथजी के मन्दिर से एक मील पर समुद्र के किनारे चौथाइ मील के लम्बाइ में स्वर्गद्वार है यहाँ यात्री लोग समुद्र की लहर में स्नान करते हैं।

मलूकदास और कबिरदास

समुद्र के किनारे बहुत से छोटे-छोटे मठ हैं। मलूक मठ में अनेक मूर्तिका दर्शन होता है। रोटि और साग प्रसाद मिलता है। कबीर दास के मठ में कबीर दास के चौरा का दर्शन होता है और पुरानी चांनी भात का फेन का पानी का प्रसाद मिलता है। यहाँ नानक शाहियों का भी मठ है। मरने के बाद स्वर्गद्वार पर लोग आते हैं।

लोकनाथ महादेव

श्री जगन्नाथजी के मन्दिर से लगभग १ मील की दूरी पर लोकनाथ महादेवजी का मन्दिर है, यहाँ जल की भूरी फूटी है। मन्दिर सदा अथाह जल से भरा रहता है जल के भीतर शीवलिंग है। यह जल नाले में से होकर पार्वती कुण्ड में जाकर गीरता है। शिवरात्री के दिन तमाम पानी के निकल जाने पर शीवजी का दर्शन होता है। पीछे फीर दश हाथ ऊँचा पानी से मन्दिर भर जात है। शिवरात्रि के दिनों में हाजारों आदमियों का मेला होता है।

मार्कण्डेय तालाब

श्री जगन्नाथ जी के मन्दिर से करीब डेढ मील की दूरी पर यह तालाब है। सब लोग पहले इस तालाब में स्नान कर लेते हैं तब श्री महाप्रभु का दर्शन करते हैं।

चन्दन तालाब

मार्कण्डेय तालाब से पूर्व कटक के रास्ते पर करीब २२५ गज चौड़ा इस से अधिक लम्बा चन्दन तालाब (पोखरा) है। अक्षय त्रितीया के दिन देवताओं के चन्द मूर्तियो को नाव पर चढाकर तालाब में जल क्रीडा कराई जाती है।

जनकपुर

श्री महाप्रभु के मन्दिर से लगभग १ मील पर जनकपुर है। पुराण के अनुसार इसका नाम गुण्डिचा है। इसी जगह पहले-पहले काष्ठ की मूर्तियाँ रखी गई थी। इसीलिये इसको जनक पुर अर्थात् जन्मस्थान कहते हैं। यहाँ खास मन्दिर में ४ फीट ऊँची १६ फीट लम्बी पत्थर की वेदी है जिस पर रथयात्रा के समय पर तीनों प्रधान मूर्तियाँ बैठाई जाती है। यह मन्दिर बहुत पुराना है।

उन्द्रद्युम्न तालाब

जनकपुर से थोडी दूर पर यह तालाब है। तालाब के पास एक मन्दिर में नीलकण्ठ और इन्द्रद्युम्न और दूसरे मन्दिर में पद्मनाभ भगवान है

प्रबन्ध

श्री जगन्नाथजी के मन्दिर की आमदानी लगभग ५ लाख रूपया है। यात्रीयों की पूजा से करीब ६ लाख रूपया आता हैं। यहाँ के कुल कर्मचारी ५ हजार से ऊपर हैं। २० हजार से अधिक पुरुष, स्त्री, बालक इत्यादि की मन्दिर से परवरिश होती हैं। जिसमें करीब ७०० आदमी मन्दिर के काम में नियत हैं। कुछ तो श्री महाप्रभु का विस्तर लगाते हैं, कुछ जगते है, कुछ पानी, कुछ भोजन और

कुछ पान देते हैं। कुछ कपड़े धोनेके काम, कुछ पोशाक रखने के काम में हैं। ४०० रसोईदार और १००० से भी ज्यादा पूजारी और पण्डे हैं। उस प्रबन्ध का भार पुरी की राजा पर हैं।

नित्यसेवा

सबेरे घण्टि बजाकर श्री महाप्रभु, बलभद्र, सुभद्रा जगाई जाती हैं। बाद कपाट खोला जाता है और धप दिखाया जाता हैं। भोजन की सामग्री सिंहासनके आगे लगाई जाती हैं। सब भोगों में सकाल भोग, प्रियवर भोग, सान्ध्य भोग और शृंगार भोग प्रधान हैं। राजा की सामग्री खास भोग मन्दिर में लगाई जाती है। गोपाल बल्लभ नामक एक खास सामग्री और महल की बनी प्रतिदिन भोग लगाई जाती है। यह भोग बिकता है और इसकी आमदानि राजा के खानगी हिसाब में रख ली जाती हैं। चारो भोग के समय एक घण्टे तक मन्दिर बन्द रहता है।

ऐसा प्रसिद्ध है कि कर्मा नाम की एक स्त्री जो वात्सल्य भाव की उपासना करती थि वह नित्य प्रति प्रातः काल उठकर बिना मुँह हाथ धोए तथा शुद्ध हुए अंगारे पर एक छोटे पात्र में खिचड़ि बनाकर अत्यन्त भक्ति और प्यार से भगवान को भोग लगाती थी। दयामय भक्तवत्सल भगवान् पुरुषोत्तम पुरी से आकर उस खिचड़ी

का भोजन करते थे। एक दीन कोई साधु कर्माबाई को शुद्ध और आचार से भोग लगाने शिक्षा देकर चलागया, कर्माबाई ने भी वैसा ही किया तब भगवान के भोजन में देर होने लगी। भगवान के आदेशानुसार पण्डीनें उस साधु को ढूंढ निकाला और उससे कहा कि तुम शीघ्र जाकर कर्माबाई को पहले की भाँति भोग लगाने की शिक्षा दो। साधु ने वैसा ही किया। कर्माबाई ने अति प्रशन्न हो पहले की भाँति बगैर स्नानादि किये भोग तैयार किया और भोग लगाने लगी। भक्तवत्सल भगवान ने इस प्रकार अपने भक्तका नाम बढाया। अभितक पहले कर्माबाई का भोग (खिचड़ी का) लगाया जाता है।

पुरी का उत्सवं.

कुल १८ मुख्य उत्सव है जिनका वर्णन निम्नलिखित है।

१– स्नानयात्रा–

यह यात्रा रथयात्रा को छोड़कर सब उत्सवों में प्रधान है। ज्येष्ठ की पूर्णिमा को भी जगन्नाथजी, बलभद्रजी तथा सुभद्रा जी स्नानवेदी पर लाई जाती है और अक्षय वट के पवित्र कुप में जल से दोपहर दिन के समय इन लोगोंके स्नान कराया जाता है फिर सुन्दर पोषाक पहनाकर मन्त्रों से पूंजा की जाती है, बाद १५ दिन तक अन्दर घर में रहते हैं। इतने दिनों तक बाहर का फाटक बन्द रहता

है, पाठशाला इत्यादि सभी बन्द रहते हैं। ऐसा कहा जाता है की अधिक स्नान करने के कारण देवता लोग बिमार हो जाते हैं। यहाँ तक की देवताओं के लिए (दवाइयाँ पाचना) की जाती हैं।

२— रथयात्रा—

यह पुरी का मुख्य और प्रधान उत्सव है। जगन्नाथ जी, बलभद्रजी, सुभद्राजी बड़ा समारोह के साथ रथ पर बैठकर जनकपुर अपने विश्राम वाटिका की ओर जाते हैं। श्री जगन्नाथ जी का रथ ४५ फीट ऊँचा ६५ फीट लम्बा और इतना ही चौड़ा भी है। इसमें ७ फीट व्यास के १६ पहिये लगे हैं। इसी प्रकार बलभद्रजी का रथ इससे छोटा है तीन देवता सुन्दर गहने पहने ठाट बाट के साथ रथपर लाकर बिठाये जाते हैं। पुरी के राजा हाथी, घोड़ा पालकी आदि असबाबों के साथ यहाँ आते हैं और रथ से दूर पर सवारी से उतर पैदल रथ के समीप आते हैं और रथ के आगे की सड़क सुन्दर झाड़ से अपने हाथों से बहारते है और पूजा करने के बाद सबसे पहले तीनों रथों की डोरी को पहले राजा अपने हाथ से खींचते है। फिर ४२०० कुली जिन लोगों को इसी काम के लिए बिना लगान की जमीन मिलि है और बहुतेरे यात्री भी बड़े प्रेम और उत्साह से रथ खींचते हैं। रथ के पहिये बालू में धंसकर कई दीन मार्ग ही में रह जाता है। श्री महाप्रभु जो दिन मार्ग में रह

जासे हैं पक्की रसोईका भोग लगता है। जनकपुर पहुंचने पर तीन दिन कच्ची रसोई का भोग लगता है चौथे दीन लक्ष्मीजी बड़े समारोह के साथ सज-धज कर अपने स्वामी के दर्शनों के लिये आती हैं। इस तिथि को लोग हरी पञ्चमी कहते हैं। दशमी के दीन सब देवता उसी रथपर लौट आते हैं जिसको लोग उल्टा रथ कहते हैं। विजय द्वार पर उत्सव होता है। सारा द्वेष मिटाने के लिए मूर्त्तियों का संस्कार होता है।

श्री जगन्नाथ स्तुति सवैया

आनि दयो गुरु को सुत लाके के मृत सुदामा कियो छनमाहीं
लखिदास दुःखी दलिरावणको दईलंक विभीषणको गहि बाहीं।
साग्रु को साग सलोनो लगो दुर्योधन के एकवान न खाहीं
हाथी के हाँक पे कान दियो हरि मौन भये कस बोलत नांहीं।
पीपा की छाप दई करुणानिधि छिपा की छानि छवावत सोई
सत स्वरूप भते नृप के पग सेय बिना सब काम वृथाहीं।
तोड़ जंजीर कबीर के काम, छुकाढि लिए नांहि के प्रभु बाहीं
विप्र के कंचन धाम किए हरि मौन भए कस बोलत नाहीं।
वंशी बजाय कसे विनती वश होय रहे रस माहीं
माखन खाय चुराय न क हूं को बूझ लडे झगडे ब्रज माहीं।
दोहा कवित्त छन्द पढे तब नाचेउ गाय अहीर न माहीं
चूक भई सहसो अस क्या हरि मौन भये कस बोलत नाहीं

दाल गलि जिन्ह ग्राम अलि वृषभान ललो के रहे गहि नाहीं
इन्दुरिराणि विद्याग्र गाँव छबीली हुए पुनि छल छलसे लगाहीं।
जिन टौना किए कछु डारि दई पढ़िके काह परछाहीं
कूबरी ऊपर भोलि रहे हरि मौन भये कस बोलत नाहीं।
जात बनाय बनायो खेत, बिना हरि बाज घने उपजाहीं
दास मलूक का दावत मास्त हमाल भये सकु व वहु नाहीं।
नन्द कुमार हरि जग ठाकुर की, यश गाय रहे जग माहीं
चूक परि हमसो अस क्या हर मौन भये कस बोलत नाहीं।
सेबरी के बेर जो मीठ मिठास सराहत जात सुखाय अघाहीं
गिद्ध अजामिल और गणिका प्रभु दीन दयाल सदा तुम ताहीं।
वेद पढ़े प्रभु श्री बलि के गृह गूंगे गोपाल भये अब जाहीं
आप कहा कछु ही न कहा हरि मौन भये कस बोलत नाहीं।
खम्भ ही से प्रकटे नरसिंह हन्या खल कश्यप को तुरताहीं
छोर की अन्त न पावत वीर बाकी दुश्शासन के तिक माहीं।
लेग्र बाधाम लियो हरि नाम बिना सब काम वृथाहीं
मोर मनोरथ पूर्ण करो हरि मौन भए कस बोलत नाहीं।
कौशिक का मन राखि लिया जब राक्षस वीस पर चिघराहीं
गौतम नारिके तारक टारि, वरि सिय जाय स्वयंवर माहीं।
नन्द नन्दन हे सबकेव प्रभु गाय रहे गुण जो जगमाहीं
रावण मारिके टारि दियो हरि मौन भये कस बोलत नाहीं।

श्रीजगन्नाथ के तुम नाथ सनाथ करो अब बाँह गृहे से
वेद पुराण कथा इतिहास, जोई निबहे एक नाम लिए से।
नाम रटा सुलहा मन वाँछित ज्यों सुर अमृत पान करे से
आठौ सिद्धि नवोनिधिसम्पत्ति पावहिं आठ कबित्त पढ़े से ।८

मन्दिर के भीतर यात्रा करने की विधि

मन्दिर में प्रवेश करने से पूर्व शङ्ख चक्राङ्कित सिंहद्वार को साष्टाङ्ग दण्डवत करके तब श्री जगन्नाथजी के मन्दिर में प्रवेश करना चाहिये । पतितपावनजी का दर्शन करना जो कि सिंहद्वार के रक्षक हैं इसके बाद विश्वनाथ भोगस्वरूप अनाज तथा गणेशजी का दर्शन कर, बटेश महादेवजी का दर्शन कर, वाटमंगला देवीजी का दर्शन करना चाहिए । वटवृक्षकी परिक्रमा करके मुक्त भगवान क्षेत्रपाल वो नृसिंहजी का दर्शन करना चाहिए । रोहिणी कुण्ड जिस कुण्ड का जल कौवे ने पानकर चतुर्भुज मूर्ति पाया था। यहीं विमलाक्षी देवी भी हैं, सरस्वती देवी, जगन्माता लक्ष्मी अर्क क्षेत्र निवासी पातालेश्वर महादेव, उत्तर में जो उत्तरायणी देवी हैं। उनका दर्शन करना चाहिए, दानोबार पद्म सुदर्शन चक्र जगन्नाथजी के लिए भगवान् से प्रार्थना कर जगमोहन मन्दिर में प्रवेश करना चाहिए । गरुड के पीछे होकर द्वारपाल विजय के पास जाकर दर्शन वो नमस्कार कर आगे

जाना बलभद्रजी, सूभद्राजी, जगन्नाथजी, सुदर्शनजी इन सब मूर्त्तियों का दर्शन कर साष्टाङ्गदण्डवत कर पूजा आदि करना या भेंट आदि जो कुछ यथासाध्य देना चढाना चाहिये ब्रह्ममार्ग की स्तुति करके यहाँ से जाना और कपालमोचन नीलकण्ठ यमेश्वरजी का दर्शन करना, विश्वेश्वरजी लोकनाथ जी मार्कण्डेयजी का दर्शन करना। जो इस रीति से परि-क्रमा कर जगन्नाथजी का दर्शन करते हैं उनको साक्षात् दर्शन का फल होता है।

फिर इस के बाद इस प्रकार दर्शन करना चाहिए समुद्र स्नान, श्वेतगङ्गा, मार्कण्डेश्वर तालाब में स्नान कर, जनकपुर से इन्द्रद्युम्न सरोवर में स्नान दान पितृश्राद्ध कर जनकपुर से मन्दिर की देवी का दर्शन पूजन कर, पूर्व-वेशी हनुमान का दर्शन कर लोकनाथ, नीलकण्ठ, कपाल-मोचन, यमेश्वर, विश्वेश्वर, विल्वेश्वर, कानापाता महावीर श्वेतमाधव, भास्कर कूप, चक्रतीर्थ, नृसिंह, वटकृष्ण आदि का दर्शन कर यथाशक्ति तीर्थों के ब्राह्मणों, पण्डा, भूखों का आदर सम्मान कर आशिष ले और कम से कम तीन रात्र बासकरै, निज स्थान को चले। रास्ते में साक्षीगोपाल का दर्शन कर तीर्थों के ब्राह्मण वो साधु से आशिष ले, भुवनेश्वर महादेव का दर्शन कर वैतरणी नदी में स्नान, गोदान श्राद्ध कर निजस्थान को जाय, और ब्रह्मचर्य धर्म से तब तक

रहे जब तक तीर्थयात्रा का उद्‌जापन न कर ले। पश्चात यथाशक्ति गुरु, ब्राह्मण और भूखों को भोजन कराये, अपने भाइ, बन्धु, ईष्ट, मित्र, कुटुम्ब, पड़ोश आदि संयुक्त आनन्द भोजन कर जीवन मुक्त का फल लें।

१) श्रीजगन्नाथजी २) सिद्धबकुल ३) संकराचार्य मठ ४) नानक मठ (पाताल गंगा यह है) ५) चैतन्य मठ ६) स्वर्गद्वार ७) कानपाता हनुमान (मन्दिर से आधामीलपर) कहाजाता। कहावत है कीं श्री सुभद्रा देवी को समुद्र का आवाज़ से भय उत्पन्न हुआ था इसिलिए श्री महाप्रभु के आज्ञानुसार ही हनुमानजी हमेशा कान लगाये रहते हैं की आवाज मन्दिर में न जा सके वहाँ भी पिण्ड़दान का विधान है. ८) सुदामापुरी ९) हरिदास मठ १०) कबीर मठ ११) बिदुर आश्रम १२) श्वेतगगा १३) चक्रतीर्थ १४) वेडी हनुमान। हनुमान जी का यहीं पहरा था यही बिना आज्ञा के श्री अयोध्याजी को चले गये इसलिए इनके पैरों में वेडी पड़ी हुई है। १५) चक्रनारायणजी १६) जनकपुर विश्वकर्मा ने चारों मूर्त्तियों को यहीं बनाया था १७) इन्द्रद्युम्न तालाब । इस स्थान पर राजा इन्द्रद्युम्न ने सहस्त्र अश्वमेध यज्ञ कीया था और असंख्य गोदान किया था, गायों के खुर से पृथ्वी में गड्डा हो गया था और संकल्प के

पानी से वह गड्डा भरकर सरोवर सृष्टि हो गयी थी, १८) नृसिंह १९) नीलकण्ठ २०) मार्कण्डेय सरोवर, यहां पिण्डदान होता है २१) हर पार्वती २२) मार्कण्डेश्वर २३) चन्दन तालाब यहाँ वैशाख शुक्ल ३ से लेकर ११ दिन तक भगवान् मदनमोहनजी की मूर्ति नावमें बिठाकर घुमायी जाती है, चन्दन यात्रा के समय यहाँ बड़ा उत्सव होता है। २४) कपाल मोचन २५) अलवूकेश्वर २६) कपोलेश्वर २७) यमेश्वर २८) मृत्युञ्जय २९) विश्वेश्वर ३०) विल्वेश्वर ३१) गोपीनाथ ३२) लोकनाथ। श्री जगन्नाथजी से दो मिल दूर है इस शिव मूर्त्ति को स्थापना श्रीरामजीने स्वयं अपने हाथों से की थी। ३३) श्वेतमाधव मास्कर कूप देखने योग्य है।

:भुवनेश्वर महादेव

काशीपति विश्वनाथ जो श्री जगन्नाथ दर्शन को आये और जब दर्शन लाभकर फिरे तब कुछ दूर जाकर प्रेम मग्न होकर ध्यान धर कर बैठ गये तब श्री जगन्नाथ देव ने प्रसन्न होकर दर्शन दिया 'वरबूहो' कहा तब श्री शङ्कर देव ने कहा कि आप दया कर वन हमारे नाम से विख्यात कर दीजिए। अतएव श्री नीलमाधव 'एवमस्तु कहकर अन्तर्धान हो गये तभी से महादेवजी उस वन में

साक्षी गोपाल

पुरी से ७ मील दूर पर (S.E.Rly) में साक्षीगोपाल रेलवे स्टेशन है। यहाँ धर्मशालायें है। सवारी भी मिलती है। जगन्नाथ दर्शन के पश्चात् इनको भी दर्शन करना चाहिए

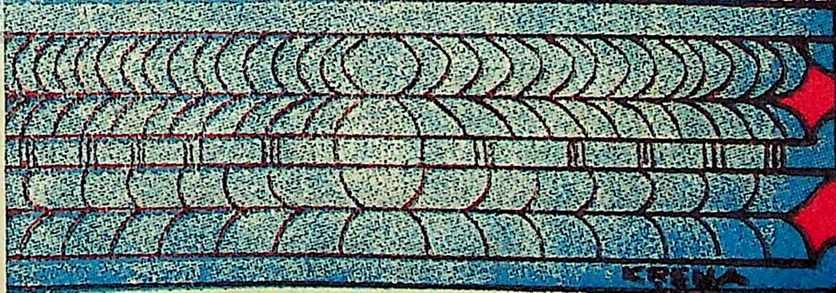


क्योंकि आप जगन्नाथ दर्शन करने के साक्षी स्वरूप हैं। इस लिए इनका नाम साक्षीगोपाल हुआ। यहाँ के पण्डे यात्री के साक्षी के लिए ताड के पत्र पर यात्रीयों के नाम लिखते हैं और पूजा का प्रसाद देते हैं।

वृहत सचित्र

श्री श्री जगन्नाथ माहात्म्य

कथा





NAGARJUNA BESHA

Rs. 5-00